आर्योदय

ARYODAYE

Read Aryodaye on line -- www.aryasabhamauritius.mu

Aryodaye No. 326 | ARYA SABHA MAURITIUS | *1st Feb. to 20th Feb. 2016*

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

ईश्वर से हम कितना नज़दीक हैं।

REFLECHISSONS SUR NOTRE PROXIMITE AVEC DIEU

ओ३म् तदेजति तन्नैजति तद्दूरे तद्वन्तिके ।
तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः ।।

Om ! Tadejati tanneijati taddoore tadvantike
Tadantarasya sarvasya tadu sarvasyāsya bāhyataha

Yajur Veda 48/5

Glossaire / Shabdartha

Tat - Dieu, **Ejati -** Les ignorants perçoivent Dieu comme une entité ambulante, qui bouge, **Tat na ejati** - De par sa nature il n'est pas en mouvement / ne se déplace pas et personne ne peut le faire mouvoir. Il est immobile. C'est parce que Dieu est omniprésent, présent partout et à tout moment. Ainsi il n'a pas besoin à se déplacer, **Tat dooré -** Malgré son omniprésence, Le Seigneur s'éloigne des méchants, des non-croyants, des ignorants et des personnes indignes. Cela signifie que Dieu est statique, immuable et ne se déplace pas mais, il leur retire son soutien. Ce sont de telles personnes qui s'éloignent de Dieu, **Tat u** - Il est **Antiké** - très proche des sages, des fidèles, des ascètes, des saints, des personnes vertueuses et généreuses, **Tat asya sarvasya antaha** - Dieu est présent à l'intérieur de l'univers et dans toutes les formes de vie, **Tatta u sarvasya asya bāhyataha** - Le Seigneur est aussi présent à l'extérieur de l'univers.

Avant – propos

Dans les Vedas, Dieu est cité comme poète à plusieurs reprises. Il est dénommé **'Kavim Kavinam'** (Sanskrit) qui signifie 'Le poète des poètes' ou 'le plus grand poète du monde' [Rig Véda 2/23/1.] Le Véda est l'œuvre magnifique, inimitable et parfait de ce poète suprême.

Cet œuvre unique de Dieu est immortel. Il ne sera ni vieux, ni périmé, il ne connaitra pas d'usure et il ne périra jamais. Il sera éternellement valable, utile et bénéfique à tous.

Le Véda comporte toutes les caractéristiques de la poésie, entre autres - le langage figuré. Dans ce verset du Yajur Véda il y a la présence d'une caractéristique particulière. C'est l'antithèse :

(i) Dieu est loin de nous et il est si près de nous.

(ii) Il est à l'intérieur aussi bien qu'à l'extérieur du monde.

Il faut bien étudier ce verset et comprendre toutes ses implications et la pertinence du langage figuré qui s'y trouve.

cont. on pg 3

N. Ghoorah

आचार्य बलदेव का महाप्रयाण

गुरुवार २८ जनवरी को प्रातः महाप्रयाण पर
जिसकी कीर्ति है वह मरता नहीं सदैव जीवित रहता है —

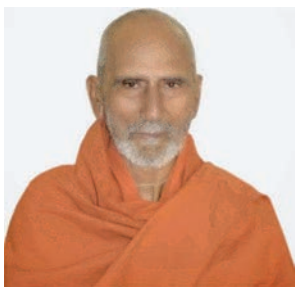

'ईश्वर-वेद-दयानन्द भक्त तपस्वी व त्यागी आचार्य बलदेव जी महाराज' वेद-वेदांग, व्याकरण के पण्डित, कर्मयोगी, तपस्वी, वयोवृद्ध विद्वान्, आदर्श चरित्र के धनी, नैष्ठिक ब्रह्मचारी आचार्य बलदेव जी अब नहीं रहे। गुरुवार ता० २८ जनवरी, २०१६ को ८४ वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया। महात्मा आचार्य बलदेव जी ने अपने जीवन में विद्युत विभाग की अच्छी ख़ासी नौकरी छोड़कर युवावस्था में संस्कृत की आर्ष प्रणाली के अध्ययन-अध्यापन को अपने जीवन का मुख्य उद्देश्य बनाया था और इसमें कृतकार्य तो हुए ही अपितु एक दीपक की भाँति अपनी विद्या के प्रकाश से अनेक प्रमुख विद्वानों व संन्यासियों का जीवन निर्माण कर उन्हें वेदों के प्रकाश से आलोकित किया था। आर्य जगत् के प्रसिद्ध गुरुकुल कालवा-हरियाणा की आपने स्थापना की थी जो आपका सच्चा स्मारक है। भारत ही की नहीं अपितु विश्व की प्रमुख हस्तियाँ योगाचार्य स्वामी रामदेव जी को आपके शिष्य होने का सौभाग्य व गौरव प्राप्त है। आदर्श जीवन व चरित्र के धनी आचार्य बलदेव जी का जीवन देश की युवा पीढ़ी के लिए आदर्श है। जीवन की सार्थकता शरीर को स्वस्थ, निरोगी और दीर्घायु बनाने सहित विद्या के क्षेत्र में व्याकरण व वेद-वेदांग का अध्ययन कर व उसका प्रचार कर जीवन को सफल बनाने में है। इसी पथ पर आचार्य बलदेव जी चले थे और यही जीवन शैली मनुष्य जीवन की सर्वोत्तम उन्नति का आधार व साधन रही है व आज भी है।

सभी मानवीय गुणों से पूर्ण व आदर्श आचार्य बलदेव जी का जन्म हरियाणा राज्य के सोनीपत ज़िले के अन्तर्गत सरगथल गाँव में लगभग ८४ वर्ष पहले धार्मिक माता-पिता के यहाँ हुआ था। आपकी अल्पायु में माता जी का देहान्त हो जाने पर पिता ने दूसरा विवाह किया। आपकी दूसरी माता जी का भी आपके प्रति अत्यधिक प्रेम व स्नेह था। ग्रामिण वातावरण के अनुसार आपने बी०ए० तक की शिक्षा प्राप्त की। इसके बाद विद्युत विभाग में आपकी नौकरी लग गई। आपका कार्यालय झज्जर में था अतः जब भी आर्यसमाज के प्रसिद्ध गुरुकुल झज्जर में विद्युत सम्बन्धी कोई समस्या आती थी तो आप वहाँ प्रायः आया ज़ाया करते थे। गुरुकुल में आर्य जगत के शिरोमणि विद्वान् व संन्यासी स्वामी ओमानन्द सरस्वती जी आचार्य हुआ करते थे। बच्चों को संस्कृत पढ़ते देखकर बलदेव जी में भी इसके प्रति अनुराग उत्पन्न हो गया। गुरुकुल में ब्रह्मचर्य सहित सत्यार्थप्रकाश आदि पुस्तकें लेकर आपने इनका अध्ययन किया। स्वामी ओमानन्द जी के प्रवचनों का भी चमत्कारी प्रभाव आप पर होता था। स्वामी ओमानन्द जी ने भी आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत का पालन किया और अनेक गुरुकुलों की स्थापना की थी जिनमें गुरुकुल झज्जर सहित कन्या गुरुकुल नरेला भी सम्मिलित हैं।

बलदेव जी कई बार रात्रि में भी गुरुकुल में ही निवास करते थे। गुरुकुलीय शिक्षा के प्रति आपका प्रेम इस सीमा तक बढ़ा कि आपने नौकरी से त्याग पत्र दे दिया और पूर्णकालिक ब्रह्मचारी वा विद्यार्थी बन गये। प्रचलित स्वभाव के अनुसार उनके परिवार को उनका नौकरी छोड़ना और घर न आना पसन्द नहीं था और वह उन्हें घर ले जाना चाहते थे। इन विघ्नों को देखते हुए आपने स्वामी ओमानन्द जी की प्रेरणा से महर्षि दयानन्द के भक्त श्री देवस्वामी जी के गुरुकुल सिरसागंज के लिए अध्ययनार्थ प्रस्थान किया और वहाँ संस्कृत व्याकरण के आचार्य पण्डित शंकरदेव जी से अध्ययन किया।

शेष भाग पृष्ठ ३ पर

सम्पादकीय

भूत-प्रेत का भय

भूत-प्रेत की भ्रामिक चर्चा हमारे समाज में प्राचीनकाल से होती आ रही है। सदियों से भूत-प्रेत के सम्बन्ध में कथित कहानियाँ पुस्तकों में लिखी गई हैं। अब यह प्रश्न उठता है कि भूत है या नहीं । अगर सचमुच है तो वह कैसा है ? किसने उसे देखा है? और कब वह दिखाई देता है? जो लोग भूत-प्रेत पर विश्वास करते हैं, वे सदा भ्रम में दुखित रहते हैं, उनके जीवन में कभी शान्ति नहीं होती है।

भूत-प्रेत, डाइन आदि के चक्कर में पड़कर कई लोग किसी साधु-बाबा या ओझा के पास झाड़ फूँक करवाते रहते हैं। वे भयभीत होकर ढोंगी तांत्रिक लोगों पर विश्वास करके अपने जीवन को बरबाद करते हैं। उन भटके हुए नादानों को भ्रम-जाल में फँसा कर धोखेबाज़ी तांत्रिक उनके धन लूटते रहते हैं और उनमें कई तरह के कुविचार पैदा कर देते हैं। जिन कारणों से कितने सुखी और समृद्र परिवारों में चैन और शान्ति नहीं।

हमारे देश में १०० वर्षों से अधिक आर्यसमाज ने सत्य-विद्याओं का प्रचार-प्रसार किया। अज्ञानता, अंधविश्वास, भ्रम आदि दूर करने का आंदोलन चलाया और आज भी मानव जाति को सत्य के आलोक में लाने का सराहनीय कार्य कर रहा है, फिर भी आज अनेक, परिवार भूत-प्रेत के झमेले में फँसे हुए हैं। अल्पज्ञानी ज्योतिषियों से अपनी भाग्य-रेखाएँ दिखाते रहते हैं। आज मूर्खता वश कई भोले-भाले इन्सान ओ३म् की जाप, ईश्वर भक्ति, धार्मिक विद्याएँ छोड़ कर भूत भगाने के चक्कर में व्याकुल हैं।

आज के इस वैज्ञानिक और साईंबर युग में कितनी महिलाएँ भूत-प्रेत मानती हैं, कई शिक्षित व्यक्ति भी ओझा के झाड़-फूँक करवा रहे हैं।

उन ढोंगी लोगों के ठग और ढोंग से कितने लोग कंगाल होकर अपने प्राण भी गवाँ रहे हैं। आज नासमझ व्यक्तियों को सत्य-विद्याएँ प्रदान करने की जरूरत है। उनकी रक्षा करने की आवश्यकता है। ऐसा लगता है कि अविद्या, झूठ, अन्धविश्वास, भ्रम और भय लोगों के कारण व्यभिचारी तांत्रिकों का धंधा गरम है। आर्यसमाज के सभी सदस्यों को इस गम्भीर विषय पर ध्यान देने की ज़रूरत है, ताकि हम उन अबोधों को सही मार्ग दर्शन करा सके।

हमारे जीवन का भाग्य विधाता परमेश्वर है, जिसका सर्वश्रेष्ठ नाम ओ३म् है। उसके अलावा संसार में कोई व्यक्ति हमारे भाग्य बदल नहीं सकता है। यदि हम स्वयं मूर्खतावश भ्रम के जाल में फँसे रहेंगे तो हम अपने भाग्य को बदल सकते हैं। अतः ईश्वर की सच्ची भक्ति करें, उसी पर पूरा विश्वास करें, वही हमारा कल्याण करेगा ।

भूत प्रेत का भ्रम तज, सदा प्रभु का नाम जप ।
जो होना है, सो होगा, आगे की चिन्ता मत कर ।

यह ध्यान रहे कि झाड़ फूँक करने वाले ठगेरों से न कभी किसी का भला हुआ है और कभी होगा। इसीलिए भूत-प्रेत के भ्रम से दूर रहना हमारे लिए हितकर है।

प्रायः यह देखा जाता है कि ढोंगी बाबा और ओझा-डाइन आदि ठगेरों का अन्तिम समय बड़ा ही दुखदायी होता है, वे अपने पाप भोगते हैं। वे जीवन भर दूसरों को भ्रम में रखते रहे और स्वयं अपने भाग्य को बदल न सके। इससे यह प्रमाणित होता है कि संसार के सारे तांत्रिक और भ्रमजाल में फँसाने वाले ढोंगी बड़े ठगेरे होते हैं। उन पर कभी भी विश्वास नहीं करना चाहिए। हमें ईश्वर पर पूरा विश्वास करके अपना जीवन व्यतीत करना चाहिए, ताकि हमारा जीवन सफलता की ओर अग्रसर होता रहे। अभय रहना जीवन है और भय मृत्यु का कारण है।

बालचन्द तानाकूर

श्री सिपरसाद रामलाल गुमाणी, ओ.बी.ई

सत्यदेव प्रीतम, सी.एस.के., आर्य रत्न

श्री सिपरसाद गुमाणी जी जिन्हें सभी लोग रामलाल गुमाणी नाम से जानते थे, एक माने हुए आर्य समाजी थे। उन्होंने अपने जीवन का अच्छा ख़ासा भाग आर्यसमाज की सेवा में लगा दिया था। उनको भूलना हमारी ओर से कृतघ्नता होगी। मेरी ओर से उनकी लघु जीवनी लिखना उनको आने वाले बहुत समय तक याद करना और उनके व्यक्तित्व और कृतित्व से प्रेरणा लेना होगा।

रामलाल जी का जन्म २३.७.१९११ में हमारे टापू के मध्यवर्त्ती छोटे से गाँव कोत-दोर, मोका में हुआ था। इनके पिता का नाम किसुन था और माता जी बुधनी थी। उनके पिता जी शक्कर कोठी में सरदार का काम करते थे। और माता जी गृहणी थी। उस ज़माने में महिलाएँ घर-द्वार देखतीं और बच्चों की परवरीश में सारा समय देती थीं। इसलिए हमारा समाज बहुत ठीक से चलता था। रामलाल अपने माता-पिता की एक मात्र संतान थे। अभी रामलाल का बचपन गुज़रा नहीं था कि माँ-बाप ने गाँव बदलने का इरादा किया और पाम्प्लेमूस ज़िले के लघु ग्राम पेचीत रोज़ाली में आ बसे। रामलाल की प्राथमिक शिक्षा पाम्प्लेमूस की क्रिस्चन इमदादी पाठशाला में प्रारम्भ हुई और उसी स्कूल में उनकी पढ़ाई छठी तक हुई। पिता जी चाहते थे कि पुत्र माध्यमिक पढ़ाई भी करे, पर माध्यमिक पढ़ाई के लिए माध्यमिक विद्यालय नहीं था। उस वक्त न पाम्प्लेमूल में छठी के बाद पढ़ाई जारी रखने के लिए विद्यालय था और न ही आसपास के गाँवों में था। किसुन का एक भाई बेलरोज़ में रहता था। रोज़हील में कोलिज था। रोज़हिल और बेलरोज़ में फ़ासला भी कम था। आने जाने केलिए रामलाल को सुविधा थी, बस मिलती थी।

सभी विद्यार्थियों को तो रोयल कोलिज जाने का अवसर नहीं मिलता। जो वहाँ पढ़ते और सफल होते तो उन्हें सरकारी नौकरी मिलती। जो दूसरे माध्यमिक विद्यालय में जाते वे अधिकतर स्कूल में अध्यापक बनते। रामलाल ने रोज़हिल के वेंकाटासामी कोलिज (Venkatasamy College) में प्रवेश पाया और अध्यापक बनने के लिए 'फोर्फ़ क्लास' (Forth Class) नाम की परीक्षा पास करली। स्कूल में पढ़ाने के लिए दो-तीन वर्षों तक मुफ़्त में पढ़ाना पड़ता था जिसको अंग्रेज़ी में 'Voluntary' कहते थे – पर तुरन्त किसी स्कूल में जगह न मिलने के कारण रामलाल ने इधर- उधर कुछ काम किया। दो साल बाद अध्यापन करना आरम्भ किया। जहाँ गाँव में रहते थे गोरों की शक्कर की कोठी थी जिसका नाम था Mount Sugar Estate वहीं पर उनके पिता जी सरदारी करते थे। कभी कभी जिसपर मिल मालिक या कोठी वाले की कृपा प्राप्त हो जाती तो उसका भाग्य ही खुल जाता था। एक गोरा मालिक था जिसका नाम था मिस्टर मारसीनी (Mr Marsini) उन्हें पता चल गया कि किसुन सरदार का एक मात्र पुत्र शहर के कोलिज में पढ़ा हुआ है। गोरे लोग अपने कारोबार की तरक्की के लिए ऐसे नौजवानों को काम में रख लेते थे। कभी कभी क्रिस्चन धर्म में दीक्षित भी कर लेते थे। किसुन सरदार को मिस्टर मारसीनी ने कहला भेजा कि बेटे को उनके पास लाये। मिस्टर Marsini ने रामलाल से चन्द बातें कीं और हिसाब-किताब रखने का काम सोंप दिया। लेखाकार का काम रामलाल ने अतिलगन साथ किया। उनकी बुद्धि भी काफ़ी तेज़ थी। धीरे - धीरे समय बीतता गया और रामलाल गोरे मालिक का वफ़ादार नौकर बन गये। अन्त में उनकी ईमानदारी देखकर रामलाल को (storekeeper) भंडारी के पद पर बिठा कर भंडार की चाभी हाथ में थमा दी। शक्कर कोठी के मज़दूर और सरदार आदि दूसरे काम करने वाले कारीगार कोठी के कैंप में रहते हैं लेकिन रामलाल को विशेष घर मिला रहने के लिए जहाँ अस्टेट के विशिष्ट लोग रहते हैं। उन विशिष्ट लोगों में अधिकतर अर्द्ध गोरे और क्रियोल जाति के लोग रहते थे।

रामलाल जी का परिवार एक काफ़ी समृद्ध और सुखी परिवार बन गया था। किसुन सरदार ने अपने दुलारे पुत्र के लिए एक नई सायकिल खरीद कर दी थी उस समय भारतीय मूल के लड़कों को साइकिल प्राप्त करना सपने के समान था। जब रामलाल ने बाल्यावस्था से किशोरावस्था में प्रवेश किया और जवानी की दहलीज़ पर पैर रखा तो उस वक्त मोरिशस में आर्यसमाज का प्रभाव पड़ने लगा था। आर्य समाज के प्रादुर्भाव से पहले क्या लड़कियों और क्या लड़कों का पाणिग्रहण कच्चीवय में हो जाता था पर रामलाल का पहला विवाह २३ वर्ष की उम्र में सन् १९३४ में हुआ था। जो लगभग तीन ही वर्ष चला था। उस दर्मियान दो संतानें हुईं। दोनों लड़कियाँ थीं। बड़ी का नाम सुमंगली शान्ता रखा गया था जो आज जीवित है और दूसरी का नाम दमयन्ती था, जो गत साल इस लोक को छोड़कर चली गयी। लड़कियों की देखभाल करने के लिए दूसरा विवाह रामलाल ने किया। क्यूरपीप की कुमारी भगमत ओखोया से। इस दम्पति से ७ बच्चे हुए चार पुत्रियाँ और तीन पुत्र। लड़कियों के नाम रखे गए क्रम से इन्दिरा, प्रियम्बदा, देवयानी और उमा। सब मिलाकर ७ लड़कियाँ हुईं दोनों पत्नियों से और तीन लड़के हुए –१. अविनाश चन्द्रदत्त २. प्रकाश चन्द्रदत ३. विपिन चन्द्रदत्त। पहली पत्नी की दमयन्ती और दूसरी पत्नी का प्रकाश का देहावसान भी गत साल ही हुआ। **क्रमशः**

ARYAN WOMEN WELFARE ASSOCIATION

under the aegis of the Arya Sabha Mauritius

is pleased to invite everyone for the Launching Ceremony of the Pre Marital Course on Sunday the 28th of February 2016 at the Farmers Service Centre, Goodlands as from 9.00 a.m.*

Chief Guest : **Hon Xavier Duval, Deputy Prime Minister and Minister of Tourism and External Communication**

Members of National Assembly of the Constituency
Hon Ashit Gungah, Minister of Commerce
Hon Sudesh Rughoobur, PPS
Hon Sangeet Fowdar

Many other Eminent Personalities and all Arya friends and family are invited to attend.
Everyone interested to book an appointment to follow the Course is kindly invited to contact the Secretary at the Arya Sabha Mauritius.

* The Farmers Service Centre of Goodlands is opposite the Bus Station of Goodlands (La gare Bus) and is easily accessible by Public Transport.

एक विशेष गुरुकुल की स्थापना हुई

धर्म-प्रेमी माता-पिताओं की सेवा में सूचित हो कि आर्यसभा 'वैदिक सेंटर यूनियनवेल में भावी धर्मोपदेशकों को प्रशिक्षित करने के उद्देश्य से एक विशेष गुरुकुल की स्थापना हुई।

माता-पिताओं से निवेदन है कि यदि वे अपने पुत्रों को भावी धर्म-प्रचारक बनाने के इच्छुक हों तो आर्य सभा के कार्यालय में उपस्थित होकर आवेदन-पत्र भर सकते हैं।

इस गुरुकुल में उन्हीं लड़कों को प्रवेश मिल पायेगा, जो धार्मिक वृत्ति के हों और जिनकी अवस्था बारह से पन्द्रह वर्ष की हो। उन्हें चार भाषाओं-अंग्रेज़ी, फ्रेंच, हिन्दी और संस्कृत का ज्ञान अन्य विषयों के साथ अनिवार्य रूप से प्राप्त करना होगा। छात्रों के चरित्र निर्माण पर विशेष ध्यान दिया जाएगा । स्नातक बनने पर आर्य सभा उन्हें पूर्णकालिक धर्मोपदेशक नियुक्त करेगी ।

इच्छुक छात्रों के शिक्षण-प्रशिक्षण, भोजन आदि का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व आर्य सभा पर होगा। यह कार्य उदार दान-दाताओं के सात्त्विक दान से संचालित होगा।

विशेष जानकारी के लिए आप सभा-प्रधान डा० उदयनारायण गंगू जी से फ़ोन पर सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं। फ़ोन नम्बर है - 52572694

Brahmāshram Ārsha Gurukul

Start of activities at the Vedic Centre, Trois Boutiques-Union Vale

Arya Sabha Mauritius (the Sabha) is pleased to announce the start of this new project - a unique Gurukul to train children to be the future missionaries of the Vedic philosophy.

Courses started on Friday 22 January 2016

Four youngsters of 12-15 years old have enrolled themselves on this project on the first day. Another 2 joined on Saturday 23.01.2016. The first activity was Yajna to mark the start of this new venture and the Vedārambha Sanskāra followed by inspiring guidance from Yogi Bramdeo Mokoonlall, Darshanāchārya, Ach. V. Oomah and Pt. Khedoo.

Aims and objectives: total personality development

Besides high academic standards, due importance would also be given to soft skills, namely - self-control; character building; the universal Vedic values, social awareness, purity at the level of mind, body and spirit; awareness of various aspects of life; meditation; ...etc. with a view that the student would, at the time of passing-out, stand out from the crowd by getting prepared for real life.

Those who successfully complete the program of studies will be offered full-time employment as priests/ missionaries of the Sabha.

Intake -- Admissions are open initially for boys aged between 12-15 years with a penchant for spiritual development and learning of the Vedic Philosophy.

Parents interested to send their sons are kindly requested to contact the officials of the Sabha at Port Louis and fill in the application form for admission.

Teaching medium : English, French, Hindi and Sanskrit.

Days & timings : Fridays (evening) , Saturdays (full day), Sundays (morning)

Lodging, boarding and related expenses during the student's stay at the Gurukul will be on account of the Sabha.

APPEAL FOR THE FUNDING OF THE GURUKUL

Members and well-wishers are humbly requested to donate generously, for the success of this venture, indeed a new edifice for the spiritual uplift of humanity. The list of donors would be regularly published in Aryodaye.

Contact persons : Dr. Oudaye Narain Gangoo, President Arya Sabha Mauritius (5257 2694)
- Yogi Bramdeo Mokoonlall, Darshanāchārya (5795 0220)
- Pt. Kaviraj Kheddoo (5760 2823)
- Ach. Virjanand Oomah (5787 2258)

पंडित रामरूप रामसाहा न रहे

धनवन्ती रामचर्ण, एम.एस.के.,आर्य रत्न

दिनांक ५ दिसम्बर २०१५ को गुडलेण्डस में ९३ वर्ष की अवस्था में शरीरांत हो गयी और अगले दिन ६ दिसम्बर को बेशुमार जन समूह के बीच उनकी अंत्येष्टि क्रिया हुई। उस अंतिम क्रिया में आर्य जगत् के वरिष्ठ सदस्यों के साथ साधारण जन तक उपस्थित थे।

पंडित जी का जन्म फ्लाक ज़िले के पूर्वी गाँव मार लाशो में १९२२ में हुआ था। वे एक कर्मठ समाज सेवी थे। अपने कठिन परिश्रम और सामाजिक सेवा के बल पर न केवल पूर्वी इलाक़े में बल्कि पूरे टापू में उनकी ख्याति बढ़ गयी थी।

वे हिन्दी भाषा के अनन्य भक्त थे। स्वामी दयानन्द के सिद्धान्तों पर चलने वाले थे। हिन्दी भाषा की पढ़ाई में उन्होंने अपना जीवन दे दिया। हिन्दी भाषा की पढ़ाई में उन्होंने अपना जीवन दे दिया। हिन्दी पाठशाला खोलना और बच्चों एवं वयस्कों को पढ़ाना अपने जीवन का मिशन समझते थे। सुदूर ग्रामों में साइकिल द्वारा पहुँचते थे और पढ़ाकर देर से अपने घर पहुँचते थे। वे अथक परिश्रम करने वाले थे।

सामाजिक सेवा के साथ ही साथ, उन्होंने अपने परिवार के प्रति पूर्ण रूप से अपना कर्त्तव्य निभाया। उनके पाँच लड़के और चार पुत्रियाँ हुईं। सभी को यथाशक्ति पढ़ाया-लिखाया और जीवन में जीने के क़ाबिल बनाया।

जीवन में उत्तरोत्तर ऊपर उठते गये। आगे चलकर आर्य सभा मोरिशस जैसी श्रेष्ठ सभा के पुरोहित बन गये और पुरोहित मण्डल के प्रधान पुरोहित बनें । वे आर्योदय आर्यसभा के मुख पत्र के कितने ग्राहक बनाये । वे लेख भी लिखते थे और व्याख्यान भी देते थे।

आगे चल कर जब आर्य सभा के कार्य से निवृत्त हुए तो हाथ में हाथ धर कर बैठे न रहे। अपनी सेवा की प्यास बुझाने हेतु कुछ श्रद्धालु लोगों के सहयोग से वेद प्रचार करने के लिए एक मण्डल बनाया और उसको पंजीकृत भी करवा लिया। कितने लोग जो धर्म परिवर्तन कर विधर्मी बन गए थे उनका शुद्धीकरण कर अपने धर्म में वापस लाये। कितनी बार अपने मण्डल की ओर से लोगों को भारत दर्शन करवाया। इन सब सेवा कार्यों के लिए विभिन्न संस्थाओं द्वारा सम्मानित भी हुए। उन सम्मानों को वे क़ाबिल थे।

इस मृत्युलोक में जो भी आता है उसे जाना ही पड़ता है। पंडित रामसाहा जी अपवाद न रहे। उन्हें भी जाना पड़ा। परमपिता परमात्मा अपनी न्याय व्यवस्था में निर्णय करके जो भी फल उन्हें मिलना चाहिए। ज़रूर दिया होगा। हम ऐसी आशा करते हैं क्योंकि परमात्मा दयालु होने के साथ न्यायकारी भी है।

Om ! Tadejati tanneijati taddoore tadvantike Tadantarasya sarvasya tadu sarvasyāsya bāhyataha

Yajur Veda 48/5

cont. from pg 1

Interpretation / Anushilan

Ce Verset du Yajur Véda nous apprend que les ignorants perçoivent que Dieu se déplace. En fait Il ne se déplace pas ! Il reste immobile !

Dieu est omniprésent dans l'univers. Il est plus vaste que l'univers. Par son omniprésence il emplit l'univers entièrement. Il se trouve aussi au-delà de cet univers. C'est évident qu'il n'y a pas d'espace supplémentaire pour que Dieu fasse le moindre mouvement pour y arriver. Donc, il n'a pas besoin de se déplacer pour voir tout ce qui se passe dans le monde, car il n'y a aucune partie de l'univers où il n'est pas présent.

C'est lui qui est l'origine de tout mouvement ou du dynamisme dans le monde. C'est lui qui active, met en branle tous les éléments et les forces de la nature dans l'univers et gère son fonctionnement.

A ce sujet on peut dire qu'il y a un parallèle entre le fonctionnement du monde et celui du corps humain. Tous les mouvements ou les actions de notre corps sont planifiés et ordonnés par notre âme. Elle manifeste sa présence partout dans notre corps. Elle n'a pas à se mouvoir pour être consciente de l'état ou les actions de différentes parties de notre corps. Elle y reste immobile, tout comme le Seigneur dans l'univers.

Ce Verset a aussi trait aux faits suivants :

- Il est si près de nous et Il est aussi loin de nous.
- Il est à l'intérieur aussi bien qu'à l'extérieur du monde.

Ces deux antithèses ont l'apparence d'un paradoxe ou d'une énigme.

Tout d'abord quand il y a mention que le Seigneur se déplace et il ne se déplace pas. C'est un fait indéniable que Dieu est présent partout dans L'univers, mais les ignorants, les illettrés, les malfaiteurs, les athées, entre autres ne sont pas conscients et ne se rendent pas compte de l'existence ou de la présence du Seigneur.

En conséquence Dieu s'éloigne de telles personnes. Cela ne veut nullement dire que Dieu se déplace et s'en va loin de ces individus. Cela signifie que Dieu leur retire sa protection, il cesse de les soutenir. Ainsi ces gens s'exposent à toutes sortes de problèmes et de malheurs. A vrai dire, ce sont eux qui s'éloignent du Seigneur.

Aussi si par la pensée l'on arrive à l'endroit le plus éloigné du monde, il y aura toujours la présence du Seigneur qui est fondamentalement omniprésent. Ceci est une autre façon de dire que Dieu est loin de nous.

Le Seigneur est aussi présent en nous dans notre âme, dans notre cœur, dans notre esprit et dans nos pensées. Il est au courant de toutes nos pensées, agissements et actions.

Ici une question très pertinente se pose : 'si le Seigneur est si proche de nous, pourquoi ne le voit-on pas ?' Il y a beaucoup de gens qui à la recherche de Dieu font un pèlerinage des lieux saints dans plusieurs parties du monde, mais ils n'arrivent pas à le trouver. Ils sont très déçus. Ils se demandent : 'Mais où se trouve Dieu ?'

Il y a, en même temps certains fidèles qui, en offrant leur prière quotidienne, demande à Dieu d'être toujours présent à leur coté pour les protéger de tout danger à tout moment. Ils croient que Dieu doit marcher et les suivre comme leurs ombres partout.

Or ces fidèles sont ignorants des attributs du Seigneur. Dans le contexte de ce verset il s'agit de son omniprésence. Ils n'arrivent pas à comprendre que Le Seigneur se trouve partout dans le monde, au sein de l'individu, à ses côtés et autour de lui. Dieu n'a pas à se déplacer.

Il y a encore beaucoup de gens indignes qui sont sous l'emprise totale de la jouissance des plaisirs du monde. Mais, quand ils sont conscientisés par les sages que la spiritualité est indispensable pour le salut de la vie humaine sur la terre, qu'il est grand temps qu'ils renoncent à leur mauvais train de vie et renouent avec la spiritualité, ils ne veulent rien entendre. Pris sous la magie des plaisirs mondains ils veulent faire durer le plaisir et n'entendent pas la voix de la raison. En guise de réponse ils laissent entendre ces paroles : 'Non, laissez-nous jouir les plaisirs d'abord. Quand nous en aurons assez nous penserons à la chose spirituelle !'

Il est bien évident que ce moment précieux n'arrivera jamais dans leur vie. De cette façon ils se dirigent inexorablement vers leur propre ruine.

Pour répondre à la grande interrogation mentionnée plus haut : "Mais où peut-on trouver Dieu ?" Les sages ont établi une analogie entre le jeu 'Colin-Maillard' pratiqué par les enfants et les démarches de l'homme en quête de Dieu.

Sachons que le 'Colin-Maillard' est un jeu très intéressant. Pour commencer ce jeu un enfant a les yeux bandés par un de ses amis. Puis tous ses amis vont se cacher dans les alentours. Celui qui a les yeux bandés aura pour tâche de marcher à tâtons, chercher et attraper un de ses amis. S'il arrive à le faire il sort gagnant et ce jeu va reprendre avec l'ami qu'il a pu attraper. Cette fois-ci son ami aura les yeux bandés et les autres vont se cacher et le jeu continue.

On peut dire que la même chose se passe dans le monde. Ici c'est le jeu entre Dieu (Ishwar Parmātmā), la matière primordiale (Prakriti), et l'âme au sein de l'individu. Par ignorance, l'individu va chercher Dieu éternellement à l'extérieur et n'arrivera pas à le trouver, tandis que Dieu se trouve dans le fort intérieur dans son âme.

Ici la question se pose : 'Parviendra-t-il à Le trouver ?'

Réponse : Oui, s'il est pris en charge et initié par un ascète, par un Gourou ou par un Yogi. Il doit pratiquer le yoga et doit être initié à la lecture des Vedas par un sage. Ce n'est que par la voie de la spiritualité qu'il arrivera à trouver Dieu en soi. Ce n'est pas par les yeux biologiques mais dans son âme (ātmā) quand il atteindra la communion avec Dieu à travers la méditation (Samadhi).

Cette analogie nous brosse un tableau exact de la situation de l'homme en quête de Dieu, mais n'arrive pas à le trouver à cause de son ignorance.

Les commentaires du Maharishi Dayananda Saraswati sur ce Verset du Yajur Véda se lisent ainsi. "O êtres humains!" Sachez que la présence ou l'existence de Dieu n'est pas perceptible aux yeux des ignorants, aux malfaiteurs, aux jouisseurs des plaisirs du monde et à tous ceux qui sont des gens indignes.

Tout en étant omniprésent dans l'univers, le Seigneur ne se déplace pas. Tous ceux qui vont à l'encontre de la loi divine en errant par-ci par-là à sa recherche, ne le connaîtront ni l'atteindront jamais. Par contre tous ceux qui se soumettent ou se conduisent conformément à ses commandements dans la vie, trouveront Dieu bien établi dans leur âme et tellement près d'eux.

Dieu qui est omniprésent, omniscient et pénétrant tout, est aussi présent à l'intérieur comme à l'extérieur de la matière primordiale (Prakriti) et dans tous l'univers.

De ce fait il est aussi au courant de tous nos agissements (les pêchés et les bonnes œuvres). C'est à la lumière de ces données (informations) que le Seigneur juge chaque individu et lui accorde les fruits de ses actions (châtiments ou bienfaits/récompenses).

Le Grand Rishi nous invite à réfléchir sur ces idées profondes et fait une mise en garde à l'homme : 'Craignez la justice divine!'

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1,Maharshi Dayanand St., Port Louis,
Tel : 212-2730, 208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu
प्रधान सम्पादक : डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी., ओ.एस.के., आर्य रत्न
सह सम्पादक : श्री सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए.,ओ.एस.के,सी.एस.के.,आर्य रत्न
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, *पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर, *पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा, *पी.एम.एस.एम*
(४) योगी ब्रह्मदेव मुकुन्दलाल, *दर्शनाचाय*
Printer : BAHADOOR PRINTING CO. LTD
Ave. St. vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038

आचार्य बलदेव का महाप्रयाण

पृष्ठ १ का शेष भाग

अध्ययन में कोई विघ्न उपस्थित न हो इसलिए आपने इस गुरुकुल में अध्ययन की जानकारी अपने परिवार को नहीं दी। इसका ज्ञान केवल स्वामी ओमानन्द सरस्वती जी को ही था। गुरुकुल सिरसागंज में अध्ययन के दिनों में आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान्, संन्यासी और नेता स्वामी इन्द्रवेश जी आपके साथी व मित्र हुआ करते थे। दोनों ने ही गुरु से शिक्षा प्राप्त की थी। आचार्य बलदेव और स्वामी इन्द्रवेश, इन दोनों ब्रह्मचारियों, ने माता-पिता की अनुमति मिलने की आशा न होने के कारण घर से भागकर गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त की थी।

संस्कृत का सम्पूर्ण आर्ष व्याकरण आपको मृत्यु के समय तक कण्ठस्थ था। संस्कृत व्याकरण के आप विलक्षण आचार्य थे। आर्यसमाज के क्षेत्र में गुरुकुल प्रभात आश्रम, मेरठ एक प्रसिद्ध गुरुकुल है जहाँ के ब्रह्मचारी विद्यार्थियों ने खेल-कूद में राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अनेक पुरस्कार प्राप्त कर देश और गुरुकुल को गौरवान्वित किया है। इस गुरुकुल के आचार्य स्वामी विवेकानन्द सरस्वती ने आचार्य बलदेव जी से अध्ययन किया है। जिन दिनों आप गुरुकुल झज्जर में स्वामी इन्द्रवेश जी आदि विद्वान् आचार्यों से पढ़ते थे तो संस्कृत व्याकरण के अध्ययन से संतुष्टि न होने के कारण आपने गुरुकुल छोड़ने का निश्चय कर लिया था। आचार्य बलदेव जी को इस बात का पता लगने पर उन्होंने विवेकानन्द जी से बात की तो उन्होंने बताया कि वह अपने गुरुजनों द्वारा संस्कृत के अध्ययन से सन्तुष्ट नहीं है। इस पर महात्मा बलदेव जी ने कहा कि कल से मैं तुम्हें संस्कृत पढ़ाऊँगा। मैं चार बजे या इससे पहले सोकर उठ जाता हूँ। यदि तुम मुझसे पहले उठ जाओ तो मुझे जगा देना अन्यथा मैं तुम्हें जगाऊँगा। इस प्रकार से प्रतिदिन चार बजे से पहले ही आचार्य बलदेव जी शिष्य विवेकानन्द जी को संस्कृत व्याकरण पढ़ाने लगे। यह क्रम चार से पाँच वर्षों तक चला। इससे न केवल विवेकानन्द जी को पूर्ण सन्तोष हुआ अपितु उन्होंने संस्कृत के व्याकरण में पूर्ण अधिकार प्राप्त किया और गुरुकुल प्रभात आश्रम, मेरठ का संचालन कर वैदिक धर्म व संस्कृति सहित आर्यसमाज के गौरव को भी देश देशान्तर मे स्थापित किया। देश भर में विभिन्न स्थानों पर ८ गुरुकुलों का संचालन कर रहे आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध विद्वान् व संन्यासी स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती आचार्य बलदेव जी के ही शिष्य हैं। आपने बताया है कि आचार्य जी व्याकरण के प्रमाणित पण्डित थे। मृत्युपर्यन्त आपको व्याकरण कण्ठस्थ रहा। *इस लेख की समस्त सामग्री का श्रेय भी स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती व उनके सुयोग्य शिष्य आचार्य डॉ० धनंजय जी को है जिसे हमने दूरभाष पर उनसे प्राप्त किया है।*

आचार्य बलदेव जी ने सन् १९७१ में हरियाणा के कालवां स्थान पर एक गुरुकुल की स्थापना की थी। इस गुरुकुल में उपनिषद्, दर्शन व वेद आदि की योग्यता प्राप्त करने के लिए संस्कृत के आर्ष व्याकरण सहित प्रायः सभी शास्त्रों का अध्ययन कराया जाता रहा है। आज के विश्व प्रसिद्ध योग प्रचारक और पतंजलि योग पीठ के संस्थापक स्वामी रामदेव जी आपके ही गुरुकुल में आपसे सन् १९८० से १९९० के मध्य पढ़े थे। आपके अन्य प्रमुख शिष्यों में स्वामी डॉ० देवव्रत जी, आचार्य डॉ० रघुवीर वेदालंकार, आचार्य डॉ० यज्ञवीर जी, स्वामी विवेकानन्द सरस्वती जी, स्वामी सत्यपति जी, आचार्य अखिलेश्वर जी, स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी, आचार्य विजयपाल जी व स्वयं आचार्य हरिदेव जी (स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी) आदि प्रमुख शिष्य हैं। अध्यापन का आपका प्रिय विषय संस्कृत का व्याकरण ही था। आपके प्रमुख गुरुओं में स्वामी ओमानन्द जी सहित पण्डित शंकरदेव जी, पं० राजवीर शास्त्री व डॉ० महावीर मीमांसक जी आदि सम्मिलित हैं।

आचार्य बलदेव जी के निधन से आर्य जगत में सर्वत्र शोक की लहर छा गई है। उनकी अन्त्येष्टि शुक्रवार ता० २९ जनवरी, २०१६ को दिन के १२.०० बजे दयानन्द मठ रोहतक में हुई। अनेक लोगों ने आचार्य बलदेव जी को श्रद्धांजलि दी। ईश्वर-भक्त, वेद-भक्त, दयानन्द आर्यसमाज भक्त, सच्चा धर्म-संस्कृति का प्रेमी, आदर्श ब्रह्मचारी, संस्कृत विद्या का निष्ठावान प्रचारक, कर्मयोगी, तपस्वी व धर्म व संस्कृति का उन्नायक श्रद्धेय आचार्य बलदेव जी को हम अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

प्रेषक - श्री हरिदेव रामधनी,आर्य रत्न, मन्त्री आर्यसभा

Brahmashram Arsha Gurukul
Trois Boutiques Union Vale
(Run by Arya Sabha Mauritius)

Receipt no	Name of Donor	Amount (Rs)
57051	YogiBramdeo Mokoonlall, Darshanāchārya	1,000
57052	Pt. Kaviraj Kheddoo	200
57053	Ach. Virjanand Oomah	500
57054	Pt. Ramsoondur Sobhun	300
57055	Dr. (Mrs) Richa Mokoonlall	1,000
57056	Shri Ramkurrun Soonarane & Family	1,000
57057	Shri Narendra Ghoorah & Family	1,000
74001	Shri Jaychund Aukhojee	25,000
	Total	30,000

(...to be continued)

सूचना

महापुरुषों का जीवन सदैव प्रेरणा-स्त्रोत रहा है। उनके जन्मदिन हो या पुण्य तिथि, ऐसे अवसर पर विशेष आयोजन द्वारा नई पीढ़ी को उनके विषय में अवगत कराते आ रहे हैं।

सावान आर्य पुरोहित मण्डल इस परम्परा में, अपना योगदान एक भव्य आयोजन जो स्वामी श्रद्धानन्द जी के जन्म दिवस से सम्बन्धित रखता है, करने जा रहा है।

सोमवार दिनांक २२ फरवरी २०१५ को आर्य समाज, स्वामी श्रद्धानन्द गुरुकुल, श्री मेघराज गुमानी सन्टर, सुयाक में प्रातः ६.०० बजे से सायं ६.०० बजे तक एक सामवेद पारायण महायज्ञ आयोजित किया जा रहा है। समस्त जन सादर आमन्त्रित हैं। प्रत्येक एक घण्टे पर पुरोहित वा पुरोहिता अपने यजमान साथ भाग लेते जायेंगे। इच्छुक व्यक्ति आचार्य बितुला से सम्पर्क रखने की कृपा करें। ५७६३९१७४

यह ऐतिहासिक महायज्ञ आर्य सभा मोरिशस के तत्वावधान में सावान आर्य ज़िला परिषद् तथा सुयाक आर्य समाज का महिला समाज के सहयोग हो रहा है।

Honouring Justice Bhushan Domah

During the Deepavali programme held on 09 November 2015 at the Arya Samaj Mandir at Bon Accueil, the Flacq Arya Zila Parishad presented a shield to Justice Bhushan Domah, honouring 'un fils du sol' of the village who grew to be an eminent Judge of the Supreme Court of Mauritius and social worker.

Shri Kamal Domah, former Manager of the DAV College at Morcellement St. André represented his brother Bhushan who was abroad at that time.

We reproduce below the wordings on the shield which we hope would serve as inspiration to others to take the plunge in social work.

QUOTE

Brilliant, broadminded, benevolent
Hardworking, high-minded, humane
Upright, unequivocal, unparalleled
Sensible, strong, successful
Harmonious, hearty, hopeful,
Authentic, accurate, admirable
Natural, noble, notable

Dutiful, diligent, dexterous, discreet
Optimist, outright, outstanding, observant
Magnanimous, marvellous, meticulous, modest
Active, analytical, artful, assertive
Humble, helpful, hard-to-find

A hard-won distinction by a strong-minded person,
Justice Bhushan Domah Arya,
the illustrious son of Late Pt. Basdeo Domah,
former priest of Arya Sabha Mauritius
for exceptional services to the nation
& to the Sabha.

Vayam syāma patayo rayināma
(RigVeda 10.121.10)
May the Almighty empower you to realise your material and spiritual goals.
Unquote

Trust (Sthir Nidhi) in the name of late Pt. Basdeo Domah and Mrs Dawantee Domah

At a function held on Sunday 25 October 2015 at the Chiranjeev Bharadwaj Ashram, Belle Mare, the Domah family had remitted a cheque of Rs100,000 to Arya Sabha Mauritius which is kept in a trust (sthir nidhi) in the name of late Pt. Basdeo Domah and Mrs Dawantee Domah and the interests accruing to that fund be used to publish the pocket prayer book for free distribution. The first edition of the prayer book was launched at that function.

Arya Sabha Mauritius extends its sincere thanks and warm wishes to the Domah family for this noble gesture with a view to disseminate the universal Vedic prayers.

The Domah family performing Yajna at Belle Mare

Launching of the Pocket Prayer Book

Shri Oudesh Domah presenting the cheque of Rs100,000 to Dr. Gangoo, Dr. Neewoor & Shri S. Peerthum respectively President, Hon. President &Vice President of the Sabha

Editorial Team

Book Launching : 'Ek aur Shatabdi Samaroh'

Ramkarrun Jokhoo

On Sunday 29 November 2015 a remarkable event took place at the seat of Nouvelle Découverte Arya Samaj : the launching of a book entitled 'Ek aur Shatabdi Samaroh' (another centenary celebration). The Nouvelle Découverte Arya Samaj has been running for 101 years and is eager to run forever, tirelessly, relentlessly and steadfastly.

The celebration was attended by many eminent personalities : Hon. (Mrs) Leela Devi Dookun-Luchoomun, Minister of Education and Human Resource, Tertiary Education and Scientific Research, Dr Oudaye Narain Gangoo, Academic Dean of Rishi Dayanand Institute and President of Arya Sabha Mauritius, Mr Harrydev Ramdhony, General Secretary, Dr Roodrasen Neewoor, Honorary President, Mr Balchand Tanakoor, Vice-President and many fluent writers, among whom Mrs Gyanmatee Ghoorah, Mr Tarachand Bissoonduth, Mrs Shanti, Miss Poornasha, Miss Kumari Mohabeer, Mr Naraindra Ghoorah, Mr Vijian Purbhoo who have written articles in Hindi, English or French on the Samaj and prominent persons associated with it throughout its performance till today. To know about them one must read the book. One to have stolen the limelight is Sardar Mahesh Ghoorah.

Nouvelle Découverte Arya Samaj has gone through good and progressive times but also had to face patches of difficult moments. Had it not been for some stalwart and inspiring supporters it would have ceased to function several years ago. Dr O.N. Gangoo has done some thorough and excellent research on the lifeline of the Samaj and its supporters. He has compiled an amazing account of their works and worth in this book, which should now be available in each Arya Samaj throughout Mauritius. I commend everyone to read this inspirational work by the President of Arya Sabha Mauritius.

The celebration was animated by impressive and significant speeches by Dr Gangoo, Mr Tanakoor and Mr Ramdhony; a transporting song eulogizing the works of the Samaj by Mrs Tara Sadhoochurun; and a dance by the students of the Hindi School attached to the Samaj. The speech that was most impressive and that stressed on the importance of a Samaj and the study of Hindi was delivered by the Chief Guest, Hon. Mrs Leela Devi Dookun Luchmun, Minister of Education, who also gracefully launched the book 'Ek aur Shatabdi Samaroh' and two other books – 'The Textbook' and 'Life and Love' written by myself.

It was a moment that surprised many present there as they discovered the history of Nouvelle Découverte Arya Samaj is out of the ordinary.

Of course, the ever-present team of the MBC was present there for reportage of the event which was broadcast and screened on TV some days later.

Finally a plate was unveiled by Hon. Mrs Leela Devi Dookhun. In homage of Late Shri Ramnarain Ghoorah (Mahesh Sardar) for having kindly donated the land (1A 28P) on 13 January 1954 to Arya Sabha Mauritius as contribution towards the construction of the Nouvelle Découverte Arya Samaj Madnir.

Once again I thank Dr Gangoo for highlighting the great works of a humble Samaj. A personal comment on Dr Gangoo : *"That man again - he impressed me!"*

Le travail social : Se forger avant de se jeter dans l'arène

Apprendre de la nature

Ceux qui s'apprêtent à se jeter dans l'arène du travail social doivent s'attendre à des barrières. Et il ne faut pas baisser les bras car la nature nous enseigne entre autres :

Chaque barrage érigé à travers un cours d'eau fera monter le niveau d'eau pour déborder. Ce même mur risque l'effondrement si le cours d'eau est en crue.

Les arbres qui portent des fruits sont toujours les favoris à recevoir les pierres ou autres projectiles. Ces mêmes arbres se baissent au temps où les fruits murissent, un vrai symbole de maturité.

Un choix clair

Il est plus facile de dessiner une ligne plus longue que de perdre son temps à effacer la tracée d'une autre personne.

Pour gagner une course il faut courir à une vitesse supérieure de nos concurrents. On perdra toujours si on s'agrippe au vêtement de celui qui est devant nous car il y demeurera toujours.

L'enseignement Védique

L'aphorisme (sutra) 1.33 du Yog Darshan, repris par le Maharishi Dayanand Saraswati dans le RigVedādi Bhāshya Bhumikā sert de boussole a nos réactions vis-à-vis des autres ***"maiyetri karunā mudito oupekshānām sukha duka punya apunya vishayānām bhāvanātah chitta prasā–danam"*** : des pensées, paroles et pratiques
(1) d'ami envers ceux qui mènent bien leur vie conforme aux règles de dharma ;
(2) de compassion envers ceux qui sont moins lotis que nous et les misérables ;
(3) de joie envers les vertueux ; et
(4) d'indifférence envers des individualistes (self-seekers), des antisociaux et ceux qui nous mettent des bâtons dans les roues. Cette dernière attitude doit être accompagnée d'une prière pour que Dieu leur donne rapidement du bon sens.

La prudence

Les médailles, distinctions, honneurs ou décorations ont pour but d'encourager les autres à s'engager dans le social. MAIS il existe aussi un fort risque de tomber dans l'autre extrême – *lokeshnā*, où l'engagement se fait plus pour se retrouver sur un podium et la récolte des étoiles.

Les fruits de nos actions *(Karma Phala)*

Les actions ayant pour but la moisson des médailles sont que du 'sakāma karma' et sert à consolider que le matériel tout en nous éloignant du spirituel.

En contrepartie, *dharma* (la vertu) demeure la base de *l'artha* (travail assidu qui nous rapporte des richesses), *kāma* (s'en servir judicieusement de ces mêmes richesses) et *moksha* (le salut du cycle de la naissance et de la mort). Les étapes de l'*ashtānga yog* nous indiquent la voie : (1) *Yama* - discipline sociale ; (2) *Niyāma* - discipline personnelle ; (3) *Asana* - posture stable ; (4) *Pranāyāma* - contrôle de notre respiration ; (5) *Pratyāhāra* – l'introversion des sens ; (6) *Dhārnā* - focaliser son attention ; (7) *Dhyāna* - la méditation ; (8) *Samādhi* - dont le premier relais nous mène à la réalisation de soi en tant que l'âme, et la finalité, la realisation de dieu.

Pour y arriver nos activités doivent être du domaine de *'nishkāma karma'* (la philanthropie / magnanimité) tout au long de notre parcours.

La moindre pensée de récolter les fruits de nos actions nous disqualifie du domaine de *'nishkāma karma'*. On n'aura rien comme *sanchita nishkāma karma* (balance cumulative) sur notre compte pour une prochaine meilleure vie. La balance risque d'être fortement négative. Alors à chacun de faire son choix avec diligence.

***Apne ko tapāyein* (le besoin de se forger)**

Nul n'échappe aux épines ou autres contretemps sur son parcours. Les résultats des actions d'une personne qui ne s'y laisse pas perturber jailliront comme le bord argenté de denses nuages où la percée du soleil est évidente. Cela requiert un calme plat, comme l'œil d'un cyclone.

Apprendre de nos aïeuls

L'hymne du RigVeda (10/191/2) ... *Devā bhāgam yathā puve sanjānānā upāsate* nous enseigne d'être à la hauteur de nos aïeuls. Un poète l'a si bien décrit : *Purvazon ki bhānti tum, kartavya ke māni bano.*

Les missionnaires ont servi leurs époques en tant que porteur de lueur ou éclaireurs afin de retirer leurs gens de l'avidyā (l'ignorance, les superstitions et autres faux croyances.) Ils ont su les mener vers vidyā (les vraies connaissances mondaines et spirituelles.) Ils nous ont légués le message : "le bien-être absolu est le fruit de la restauration de notre état naturel de spiritualité ou réalité spirituel."

Que le parcours édifiant de ces missionnaires au sein de l'Arya Samaj - une association exemplaire nous sert de point de référence (*benchmark*) pour une introspection approfondie au niveau de *manasā, vāchā, karmanā* (pensées, paroles et pratiques) et une prise de conscience.

Nos aïeuls avaient senti le besoin de connecter à la famille où on retrouve plusieurs générations. Qu'on refasse ce même effort pour regrouper les enfants et jeunes. Qu'on ne se cantonne pas au sein des quatre murs des mandirs ou *baitkās*.

Pour mener la société vers un meilleur avenir, la transformation de soi-même en *'role-model'* est fondamentale. Que le travail commence avec soi et chez soi.

La spiritualité nous donne la force de surmonter la négativité. Tout en élevant le niveau de confiance en soi elle nous permet de mieux se maitriser, d'être aux commandes de nos actions et de progresser vers la réussite. La défaite nous sert de tremplin …reculer pour mieux sauter !!

Une des enseignements de Krishna à Arjuna sur le champ de bataille de Kurukshetra se lit ainsi : *Vous avez le droit d'accomplir intelligemment vos obligations mais n'essayez pas de contrôler les résultats. Les fruits de vos actions ne doit pas servir de prétexte !*

Le succès n'est pas que matériel !

La joie, la paix et le désir de servir avec passion doit s'enchainer au fond de nous aux moments glorieux, sans arrière-gout. L'ancien Président de l'Inde, Dr. A.P.J. Kalam nous rappelle : "Je crois que quelqu'un ne peut savourer la réussite que s'il a déjà gouté la pilule amère de la défaite. J'ai connu les deux et appris les leçons de la vie."

La spiritualité éveille notre conscience. Une harmonie entre nos pensées, paroles et pratiques nous forgera pour essuyer les revers et enlacer le succès. Kalam l'avait appris auprès d'un gourou au temps d'un très bas moral suivant le rejet de son candidature pour un emploi.

La spiritualité et les grands du business de nos jours

L'étendu de la philosophie de gestion de Konosuke Matsushita colle à son livre "Not for Bread Alone."

Steve Jobs, le concepteur d'Apple avait abandonné l'école. Un entrepreneur lui avait refusé un emploi pour niveau insuffisant d'éducation. Jobs a eu un éveil de conscience / une intuition durant un parcours spirituel en Inde. Apple est devenu le succès dont on connait tous.

Idem pour Mark Zuckerberg, le co-fondateur de Facebook qui lui aussi eu son flair en Inde.

Réussir n'est pas chose facile

Les ingrédients sont : la focalisation de nos pensées et actions, la dextérité, la franchise, l'intégrité, une méthodologie de travail, la persévérance, la tranquillité d'esprit …etc. Il ne faut pas être défaitiste. Il nous faut apprendre de nos précédents erreurs et de s'inspirer du travail d'autrui.

Une foi immense en ses aptitudes donnera un nouveau souffle à la créativité, la sagesse et l'énergie interne. Nous avons la capacité d'atteindre nos objectifs. Suffit qu'on ait une approche convenable et désintéressée, la pensée positive et une foi inépuisable en Dieu.

Yogi Bramdeo MOKOONLALL, Darshanāchārya
Arya Sabha Mauritius, Port Louis

Bibliography : Yog Darshan, RigVeda, Satyārtha Prakāsh, RigVedadi Bhāshya Bhumikā, Sanskāra Vidhi, Internet